गधा जो अक्लमन्द बनना चाहता था

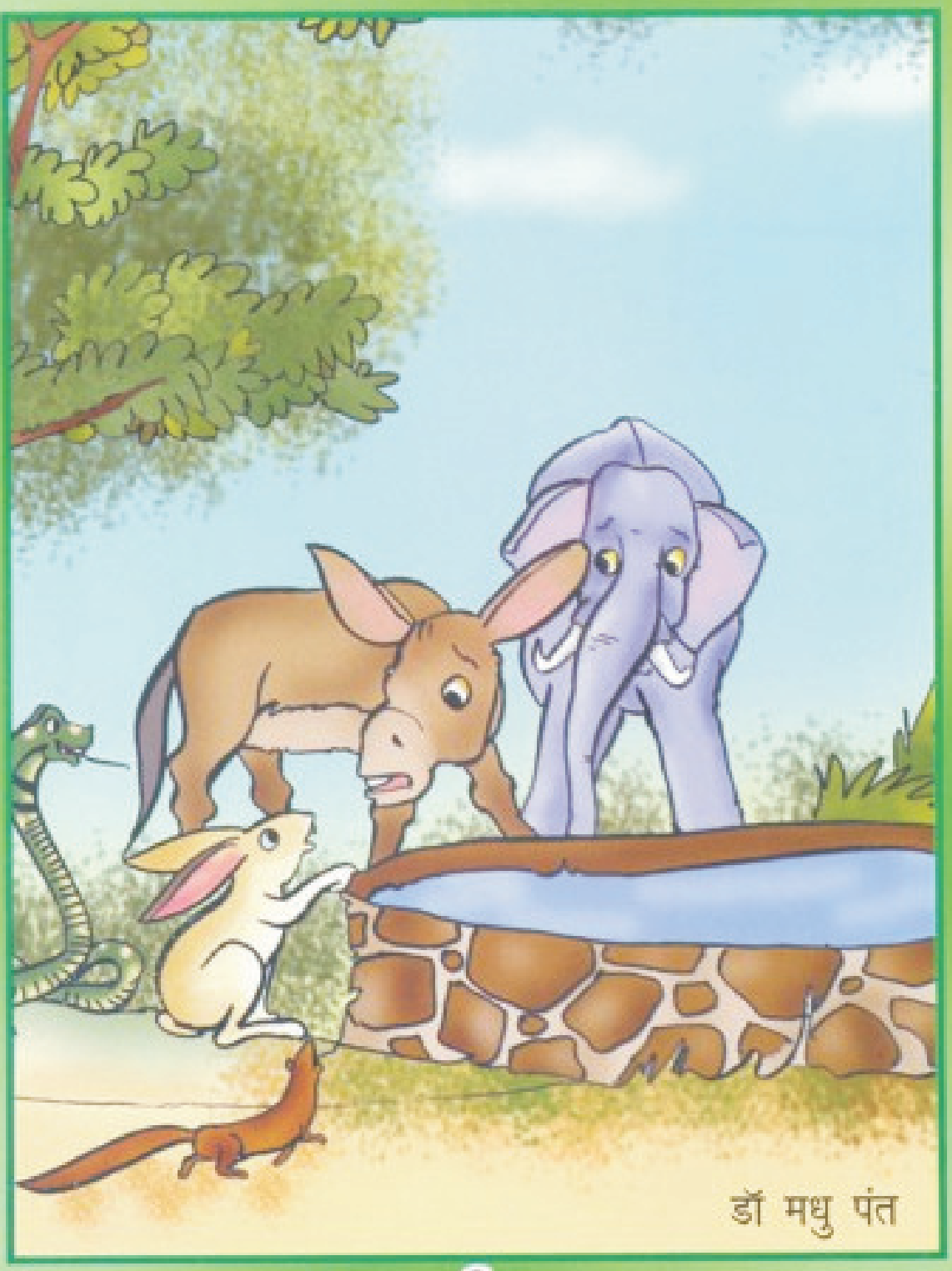

डॉ मधु पंत

स्पर्श Sparshmani

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

ISBN : 978-81-906764-7-2

गधा जो अक्लमन्द बनना चाहता था

लेखक :
डॉ. मधु पंत

प्रकाशक :
स्पर्शमणि
104 पॉकेट–ए, माउन्ट कैलाश,
ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली – 110065
मो. नं. 9958077550

संस्करण :
सन् 2012

चित्रांकन
भुपेन्दर

रूपांकन
श्रीमती सरस्वती

मूल्य : ₹135/-

गधा जो अक्लमन्द बनना चाहता था

स्पर्श
Sparshmani

बच्चों से.....

नन्हे साथियो!

यह कहानी एक गधे की कहानी है जो अक्लमंद बनना चाहता था। वह लोगों के ताने और उलाहने सुन–सुन कर दुःखी हो गया था। उसकी इच्छा थी लोग उसे भी बुद्धिमान कहें और उसको भी अक्लमंद के रूप में पहचाना जाये। उसने कोशिश की और उसे एक मौका भी मिल गया अपनी मनोकामना पूरी करने का। पर क्या वह सचमुच में अपनी मंशा पूरी कर पाया?... यह तो तभी पता लगेगा जब आप इस पुस्तक की कहानी को पढ़ेंगे।

कहानी के साथ–साथ आप यह भी जानेंगे कि प्रकृति में सभी पशु–पक्षियों, जीव–जन्तुओं का संतुलन होना अति आवश्यक है। यदि जीवन में संतुलन नहीं होगा तो सब कुछ अव्यवस्थित हो जाएगा और यदि समय पर आँखें न खुलीं या समझ न आई तो सर्वनाश हो जाएगा।

हास्य और रोचकता से भरपूर इस कहानी में कहीं गधा राज के गधा नियम हैं तो कहीं जानवरों द्वारा गधा नियमों को न निभा पाने की लाचारी भी ... उस लाचारी का परिणाम क्या हुआ यह तो कहानी पढ़ कर ही मालूम होगा ... लेकिन गधा अक्लमंद बन पाया या नहीं यह भी मालूम करना ज़रूरी है। तो झटपट पढ़ डालिए पुस्तक, "गधा जो अक्लमंद बनना चाहता था।"

– मधु पंत

पुस्तक के संबंध में.....

बुद्धिमान बनने की इच्छा रखने वाले गधे के माध्यम से हास्य से भरपूर इस कहानी में पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के संतुलन की बात अत्यंत रोचकता व सरसता से उजागर की गई है। जंगल में, गधे के राजा बनते ही शुरू हो जाते हैं गधा नियम। उन गधा नियमों से परेशान जंगल के जीव –जंतु अचानक जंगल में होने वाले असंतुलन से परेशान हो जाते हैं। शाकाहारी और माँसाहारी दोनों ही प्रकार के जानवर दुःखी हो उठते हैं – और तब बुद्धि का प्रयोग ही जंगल के जानवरों को राहत दिला पाता है।

यह अत्यंत रोचक व अनोखी कहानी है उस गधे की जो अक्लमंद बनना चाहता था।

लेखक परिचय

डॉ. मधु पंत : पिछले चार दक्षकों से भी अधिक समय से बच्चों के विकास एवं शिक्षा संबंधी कार्यक्रमों में संलग्न; राष्ट्रीय बाल भवन के निदेशक के रूप में लगभग सत्रह वर्षों के कार्यकाल में अनेक विशिष्ट एवं नवीन योजनाओं का सूत्रपात (यथा बालश्री योजना, राष्ट्रीय युवा पर्यावरण विज्ञानियों की गोष्ठी, राष्ट्रीय साहित्यिक गोष्ठी; अक्कड बक्कड़ और सुलक्ष्य जैसी पत्रिकाओं का प्रारंभ); अभिनव प्रशिक्षण कार्यक्रम; अंतर्राष्ट्रीय रूप से फिल्म 'विज्ञान क्या है?' के लिए एन. एच.के. (जापान) एवार्ड प्राप्त; नार्वे के अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन में कविता 'पानी की कहानी' के लिए प्रथम पुरस्कार; हिंदी अकादमी, दिल्ली द्वारा बाल–किशोर साहित्य से सम्मानित; विज्ञान में स्नातक एवं स्वर्ण पदक प्राप्त; हिंदी के लघु उपन्यासों में बाल मनोविज्ञान शोध कार्य विशेष रूप से प्रशंसित; सी.आई.ई.टी., एन.सी.ई.आर.डी. द्वारा आयोजित अखिल भारतीय बाल शैक्षिक श्रव्य–दृश्य महोत्सव में सर्वश्रेष्ठ श्रव्य कार्यक्रम का पुरस्कार प्राप्त।

बच्चों में वैज्ञानिक चेतना व पर्यावरण संबंधी जागरूकता उत्पन्न कराने के अनौपचारिक प्रयासों में सदैव संलग्न; पर्यावरण एवं वन मत्रालय द्वारा वित्तीय सहायता से पोषित परियोजना 'संचरण' के अंर्तगत पर्यावरण संबंधी गीतों की रचना तथा श्रव्य सी.डी. का निर्माण एवं 5000 विद्यालयों में उनका वितरण; राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग भारत सरकार द्वारा सन् 2006 में बच्चों में विज्ञान व प्रौद्योगिकी को लोकप्रिय कराने के संबंध में **राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त**; बाल मनों की तह तक पहुँच कर उनके अनुरूप रचना करना तथा अभिनव कल्पना द्वारा जिज्ञासा उभारने वाले तत्वों एवं कौतुक भरी रचनाओं द्वारा बच्चों से शीघ्र तादात्म्य बनाने की क्षमता; बाल मनोविज्ञान की सूक्ष्म पकड़; कई प्रकाशकों के साथ हिंदी की पाठ्य पुस्तकों की रचना प्रक्रिया में संलग्न तथा पाठ्यक्रम में साहित्य के साथ–साथ भाषा, विज्ञान, इतिहास, पर्यावरण के समन्वित रूप की रचना करने की मौलिक पहल।

संप्रति : पूर्ण रूप से लेखन में संलग्न।

स्पर्शमणि द्वारा अभिनव एवं सजृनात्मक बाल साहित्य का प्रकाशन।

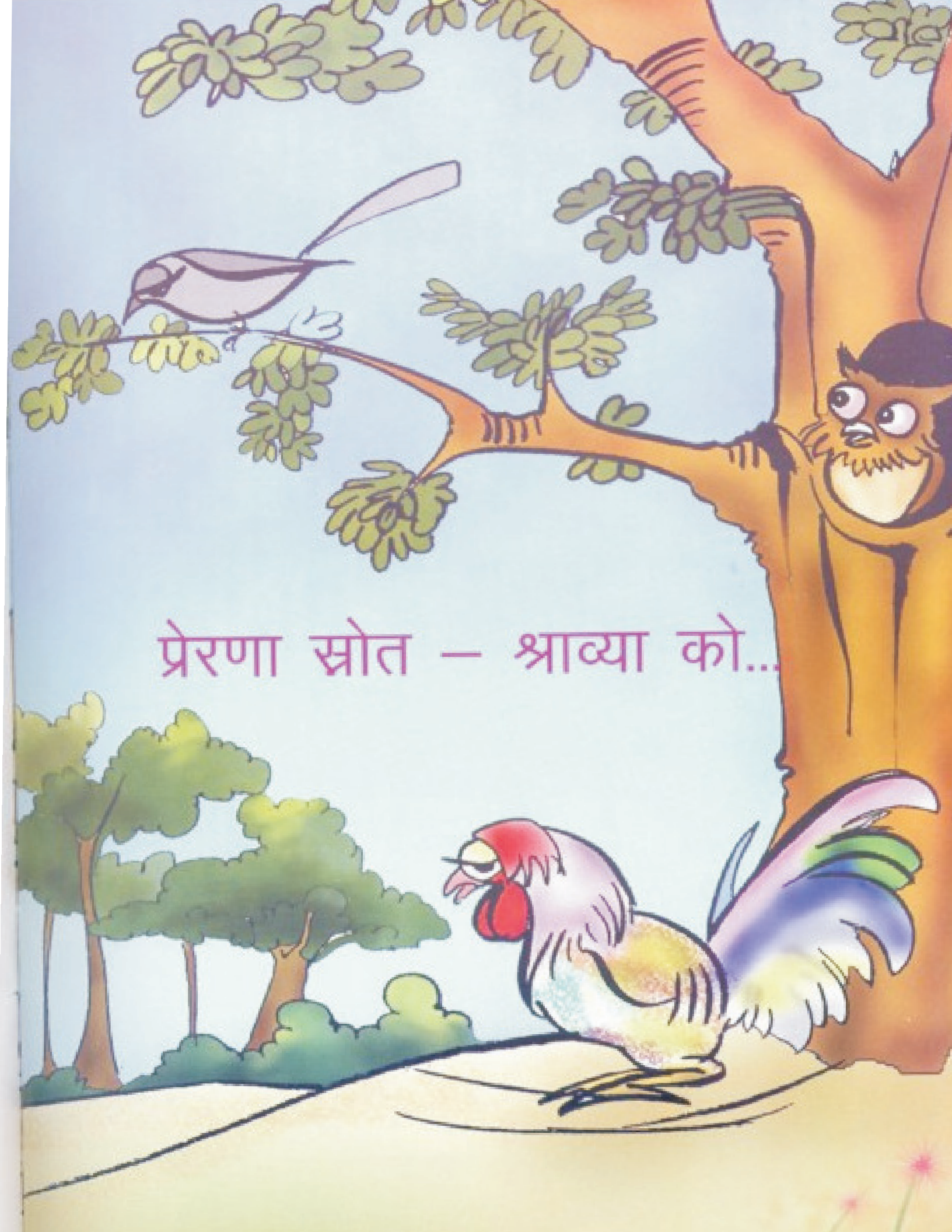
प्रेरणा स्रोत – श्राव्या को...

गधा जो अक्लमन्द
बनना चाहता था

भोंदू गधा अपने नाम के अनुसार ही भोंदू था। कोई उसे बुद्धू कहता तो कोई बेवकूफ...कोई अक्ल का दुश्मन कहता तो कोई उससे "दिमाग में भूसा भरा है क्या?" जैसे सवाल करता। भोंदू इन सब बातों से बड़ा दुःखी था। वह हमेशा सोचता कि काश! वह भी अक्लमन्द कहलाता। एक दिन वह यही सोच कर उदास बैठा था।

तभी उसे अपने दादा की याद आई जो शहर में बोझा ढोने का काम कर चुका था। उसने भोंदू को बताया था कि मनुष्य अपने मन की बात पूरी करने के लिए भगवान की प्रार्थना करता है। पूजा, प्रार्थना या तपस्या करके वरदान पाने की कहानी भी उसके दादा ने उसे सुनाई थी।..... उसने सोचा कि क्यों न वह भी भगवान की प्रार्थना कर, भगवान से अक्लमंदी का वरदान माँग ले?

बस फिर क्या था?– भोंदू गधा एक गुफा के भीतर जा कर अपने पिछले पैरों के बल पर खड़ा होकर, आगे के दोनों पैरों को उठा कर, गर्दभ सुर में गा कर भगवान से प्रार्थना करने लगा।

इस अनोखे भक्त की अनोखी प्रार्थना को देखकर भगवान का मन खुश हो गया। वे तुरंत प्रकट हो कर बोले–

"तुम्हारी प्रार्थना से मैं खुश हुआ। तुम जो चाहोगे पाओगे। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए? राज–पाट?.... धन–दौलत?.... पत्नी–बच्चे?.... राज महल?.... ढ़ेर सारा सवादिष्ट भोजन?.... या मोटर कार?....तुम जो चाहो वही मिलेगा। भोंदू गधे ने जब यह सुना कि वह कुछ भी पा सकता है, तो वह यह भूल गया कि वह अक्लमंद बनना चाहता था। वह फौरन बोल उठा–"हे भगवान! यदि ऐसा है तो आप मुझे जंगल का राजा बना दीजिये"। "ऐसी ही होगा", कह कर भगवान अंतर्ध्यान हो गये।

जैसे ही गधा गुफा से बाहर निकला और जंगल की ओर बढ़ा उसने 'गधे राजा की जय–जयकार के नारे सुने। तभी कई जानवरों ने उसके पास पहुँच कर उसे कंधे पर उठा लिया और "गधे राजा की जय", "गधे राजा ज़िन्दाबाद" के नारे लगाने गये। उसे उस स्थान पर पहुँचाया गया जहाँ शेर बैठता था। यह देख कर गधे की खुशी का ठिकाना ही न रहा। उसका मन कर रहा था कि वह खुश हो कर धूल में लोट लगाए और गर्दभ–सुर में गाना गाए। पर उसने बड़ी मुश्किल से अपने आप को ऐसा करने से रोका।

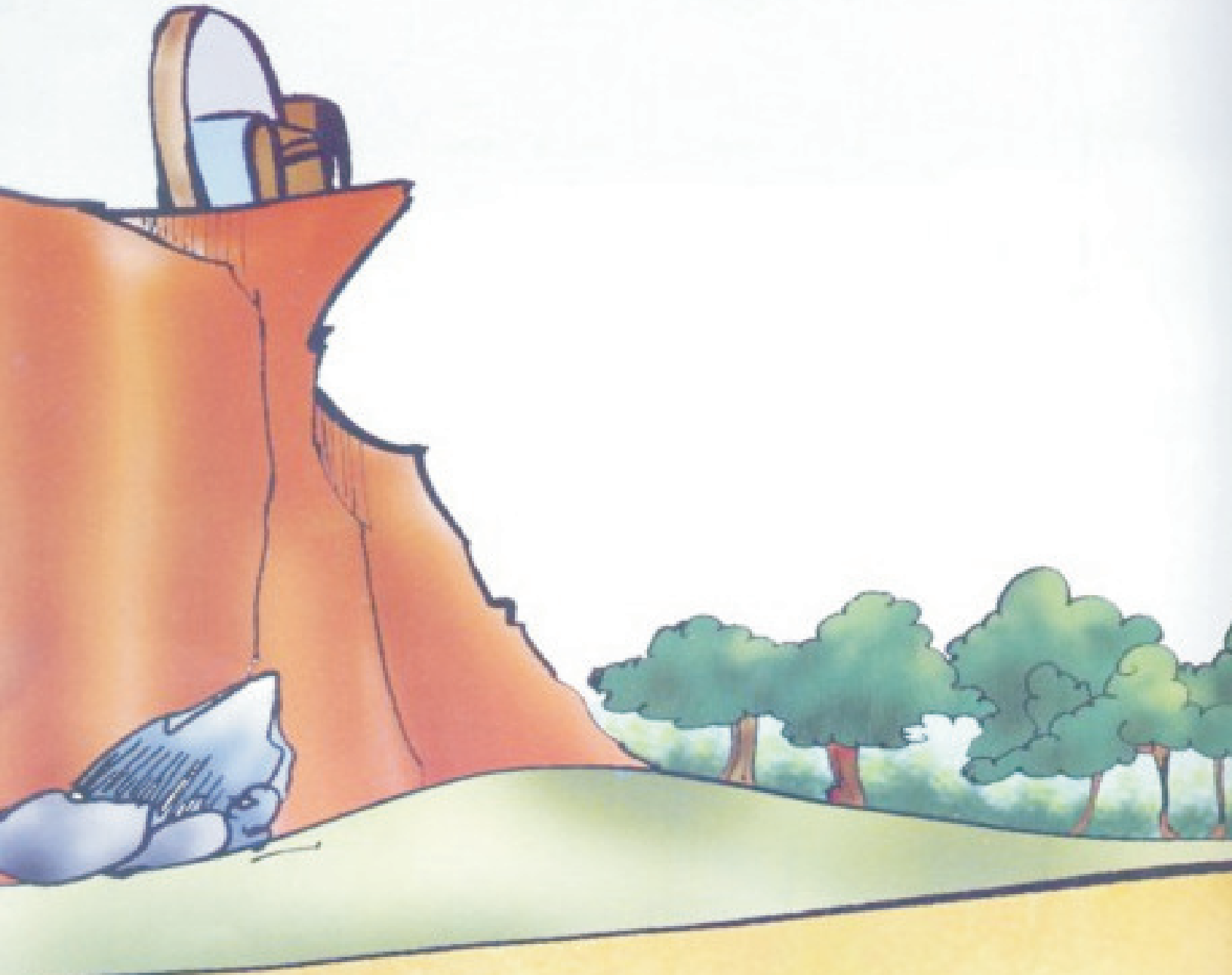

"गधे महाराज! यह आपका सिंहासन है", चतुर लोमड़ी उस ऊँची चट्टान की ओर इशारा करके बोली, जिस पर अब तक शेर बैठता था। "आप सिंहासन पर बैठिए महाराज! आपकी प्रजा आपका स्वागत करने को उत्सुक है", सबने कहा। पर गधा तो बैठ नहीं सकता था क्योंकि वह या तो खड़ा रह सकता था या ज़मीन में लोट लगा सकता था।

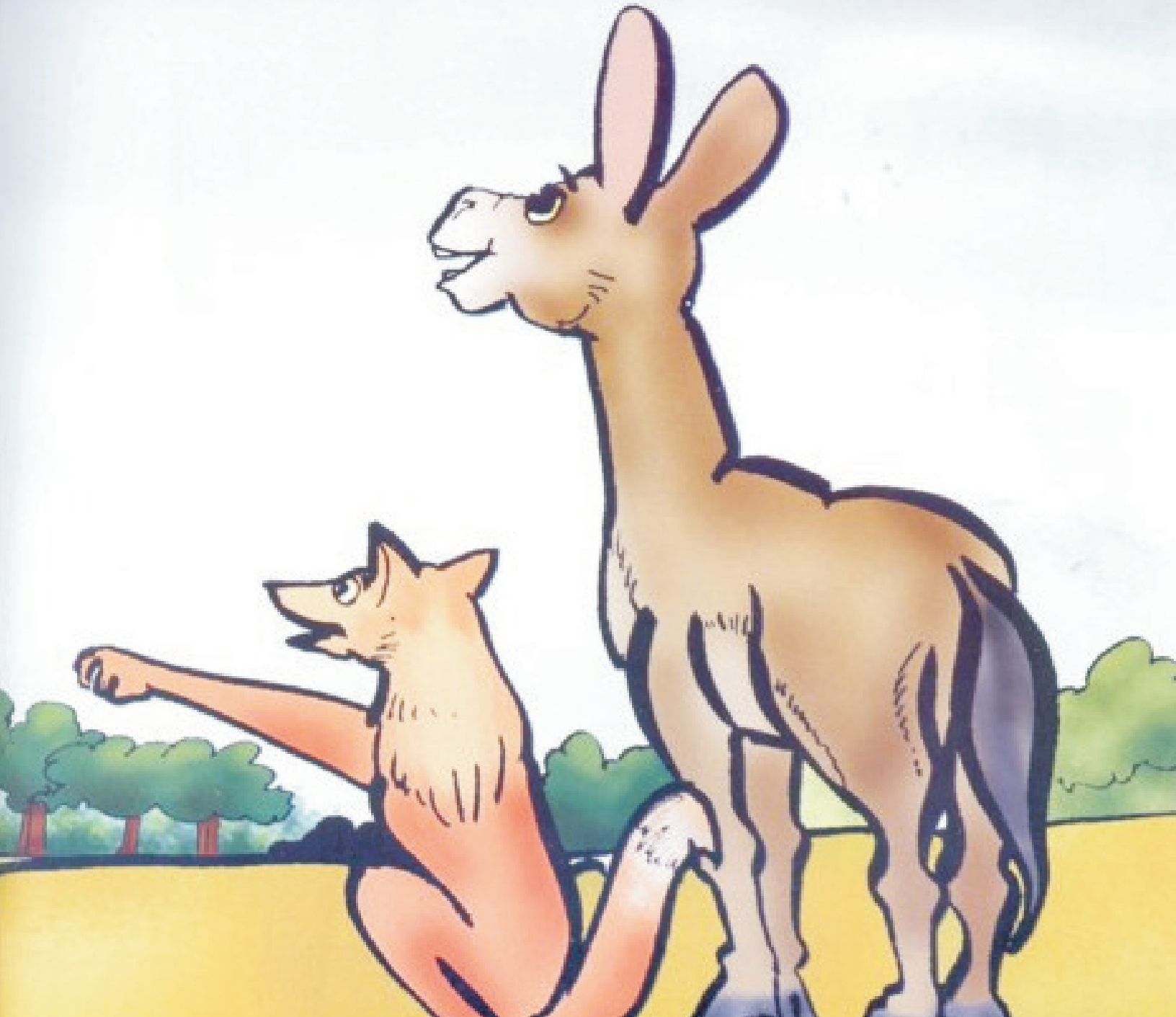

राजगद्दी के पास पहुँच कर गधा उस पर खड़ा हो गया और बोला, "मैं सिंहासन पर बैठूँगा नहीं, खड़ा होकर ही राज करूंगा।..... और आज से इस जंगल में सारे 'गधा–नियम' लागू होंगे", भोंदू गधे ने कहा। "गधा नियम", सब जानवरों ने हैरान होकर एक दूसरे की ओर देखा। "हाँ–हाँ "गधा–नियम", भोंदू हँस कर बोला। "सबसे पहला नियम तो यही होगा कि आज से सभी जानवर खड़े रहेंगे, कोई भी नहीं बैठेगा।"

दूसरा गधा नियम यह होगा कि जंगल के राज–काज में केवल 'गधा कैबिनेट मेरी मद्द करेगी।

तीसरे गधा नियम के अनुसार सभी जंगलवासियों को केवल गर्दभ सुर में बोलना होगा। किसी अन्य भाषा में कोई पशु–पक्षी, जीव–जन्तु नहीं बोलेंगे।

चौथे गधा नियम के अनुसार जब भी कोई मुझसे मिलेगा, गर्दभ राग में अलाप ले कर ही नमस्कार करेगा। हर विशेष मौकों पर काम की शुरूआत गर्दभ गीत से ही होगी।

पांचवाँ गधा नियम यह होगा कि अब से जंगल में कोई जानवर शिकार नहीं करेगा। कोई भी माँसाहारी नहीं होगा। सभी केवल घास–पत्ते, फल–फूल खायेंगे।

छठे गधा नियम के अनुसार सुबह–सुबह मुर्गा बाँग नहीं देगा बल्कि सभी जानवरों को जगाने का काम भी गधे करेंगे। वे अपनी सहूलियत के अनुसार जब भी जागेंगे, गर्दभ गाने गा कर अन्य जानवरों को जगायेंगे। "सातवाँ गधा नियम यह होगा कि सभी खूंखार जानवर जैसे शेर, चीता, लकड़बग्धा, भेड़िया आदि जंगल के चारों ओर पहरा देंगे ताकि कोई मनुष्य जंगल से किसी भी गधे को बोझा ढ़ोने के लिए शहर न ले जाए।"

इस प्रकार सारे "गधा नियम" बन गए और "गधा केबिनेट" के अन्य गधे साथी भी चुन लिए गए। उनके सम्मान में सबने "गर्दभ् गीत" गाया।.... और इस तरह "गधे–राज" का श्रीगणेश हो गया।

लेकिन ज़ल्दी ही सारे जंगलवासियों को अनुभव होने लगा कि यह गधा राज अधिक दिन तक उनके गले से नीचे नहीं उतरेगा.....क्योंकि सभी जानवर "गधा कानून" से परेशान हो गए थे। माँसाहारी जानवरों से घास–पत्तियाँ खाई ही न जातीं। जंगल में घास व पेड़ों की पत्तियाँ भी कम होने लगीं। फल यह हुआ कि शाकाहारी जानवरों के लिए भी अपनी भूख मिटाना कठिन हो गया। जंगल का सारा संतुलन ही अव्यवस्थित हो गया।

कोयल गर्दभ राग ही नहीं गा पा रही थी। गर्दभ स्वर में गाना सीखना उसके बस की बात ही नहीं थी। मुर्गा बाँग दिए बिना परेशान हो गया क्योंकि सुबह–सुबह बिना बाँग दिए उसका खाना हज़म ही नहीं होता था।

मनुष्य को जैसे ही पता चला कि जानवर माँसाहारी नहीं रहे, वह बिना किसी भय के जंगल में प्रवेश करने लगा और शिकार कर जानवरों को ले जाने लगा। सारे जंगल में त्राहि–त्राहि मच गई।

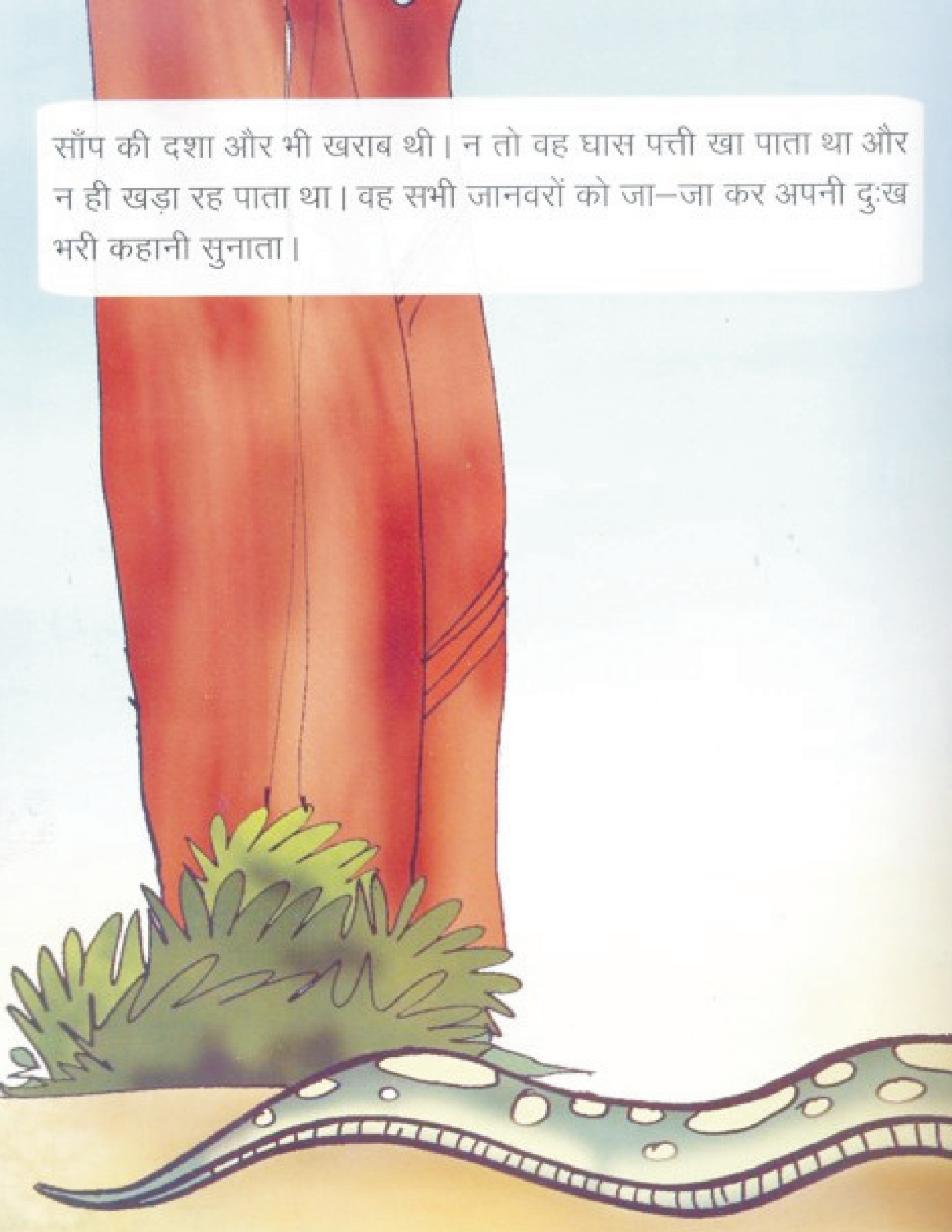

साँप की दशा और भी खराब थी। न तो वह घास पत्ती खा पाता था और न ही खड़ा रह पाता था। वह सभी जानवरों को जा–जा कर अपनी दुःख भरी कहानी सुनाता।

सारे जंगलवासी परेशान हो गए। एक दिन जब गधा राजा और उसकी गधा कैबिनेट के गधे साथी, भरपेट घास पात, फल–फूल खा कर, जी भर गर्दभ सुर में गा कर सो गए तो सारे जानवर एक जगह एकत्रित हुए। शेर, चीता, हाथी, चमगादड़, साँप, नेवला..... पशु–पक्षी, जीव–जन्तु सभी एक साथ।

सबने एक स्वर से कहा, इससे तो अच्छा शेर राज था। कम से कम अपने मन का खाना तो मिलता था। "मैं तो भर पाया", मरे हुए स्वर से साँप बोला। "न भोजन न आराम.....बस अब मेरी होने वाली है सबसे राम राम।" "माँसाहारी जानवर माँस खाते थे घास–पात वाले घास–पात। कम से कम जंगल में संतुलन तो था। सभी खुश थे", सिर खुजलाते हुए उल्लू भी बोला। पर इस समस्या का हल कोई ढूँढ नहीं पा रहा था। जब सारे जीव–जंतु गहरी सोच में डूबे हुए थे, अचानक से एक नन्हा खरगोश उछल कर बोला, "चाहे शेर मेरे परिवार वालों और रिश्तेदारों का शिकार कर लेता है पर फिर भी मुझे लगता है कि शेर का राज ही सही था। यदि आप चाहें तो इस समस्या का हल मैं बता सकता हूँ।"

"सारे जानवर एक साथ चिल्लाए" "जल्दी बताओ–जल्दी बताओ"। शेर ने भी पूछा "क्या सचमुच तुम्हारे पास कोई उपाय है?"

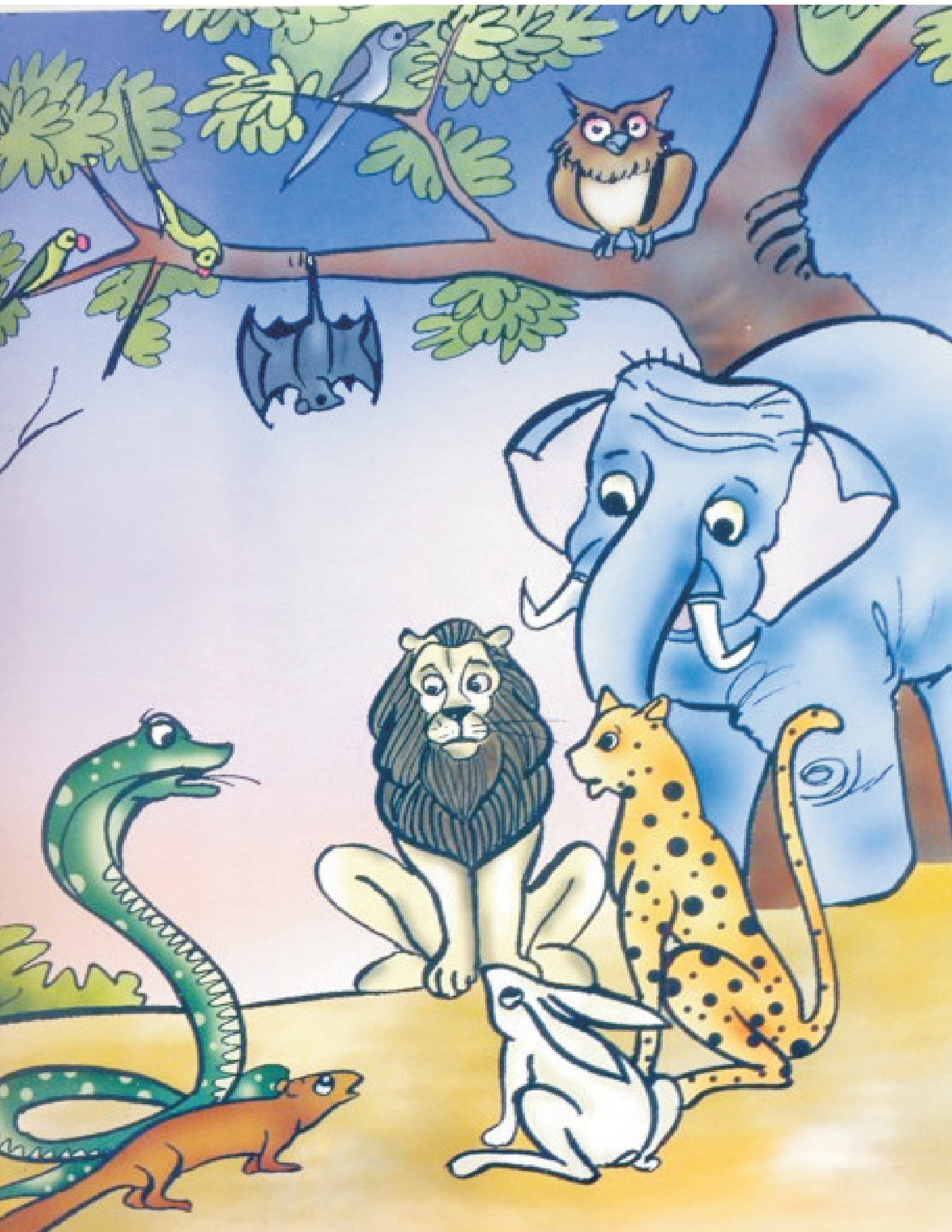

खरगोश हँसकर बोला, "महाराज आपको मालूम है ना, कि मेरे दादा के दादा के दादा के दादा....के परदादा ने आपके मेरे दादा के दादा के दादा के दादा के दादा....के परदादा को धोखे से कुँए में गिरा दिया था...वही तरीका फिर से अपनाया जा सकता है। फिर न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी...यानी न रहेगा गधा राजा और न बजेगा हम सबका बाजा।"

खरगोश का उपाय सुनकर सभी जानवर खुशी से उछल पड़े।

अलगे दिन सुबह–सुबह, सभी जानवर शेर, चीता, भालू, भेड़िया, हाथी, घोड़ा, साँप, नेवला, तोता, मैना, कौवा, कोयल, उल्लू, चमगादड़.....पहुँच गए गधे राजा के पास। गर्दभ स्वर में आखिरी बार गा कर सभी ने गधे राजा को नमस्कार किया। "अरे! आज सुबह–सुबह यह गर्दभ गान और हमारा इतना सम्मान! बोलो–बोलो क्या है काम?गधा राजा खुश होकर बोला।

लोमड़ी ने आगे आ कर कहा....."महाराज...जंगल में एक दूसरा राजा आ गया है– आप ही जैसा। कहता है मैं जंगल का राजा हूँ। मुझे भगवान ने राजा बनने का वरदान दिया है। आप ही बताइए महाराज... .....क्या एक जंगल में दो राजा हो सकते हैं"?

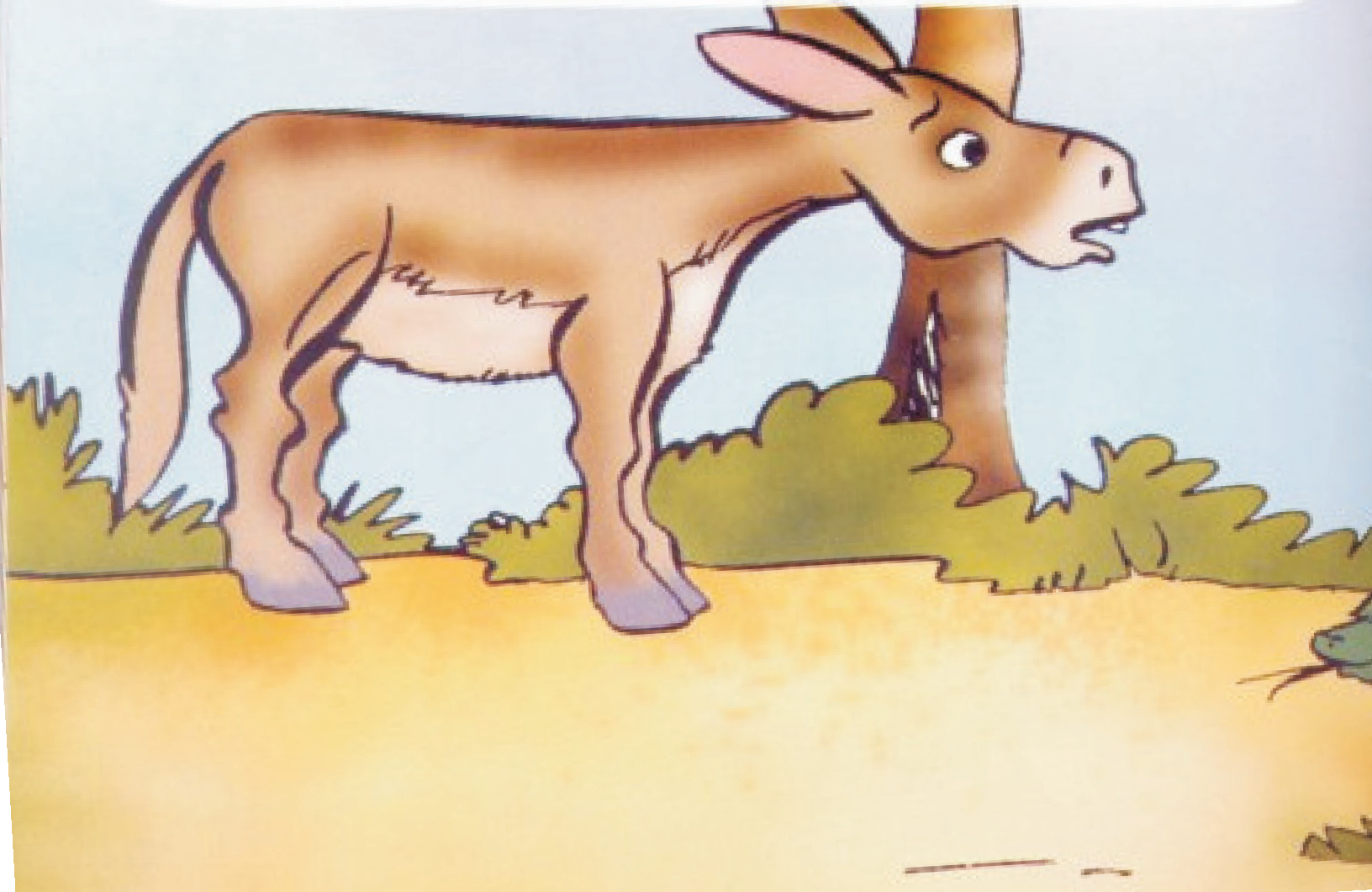

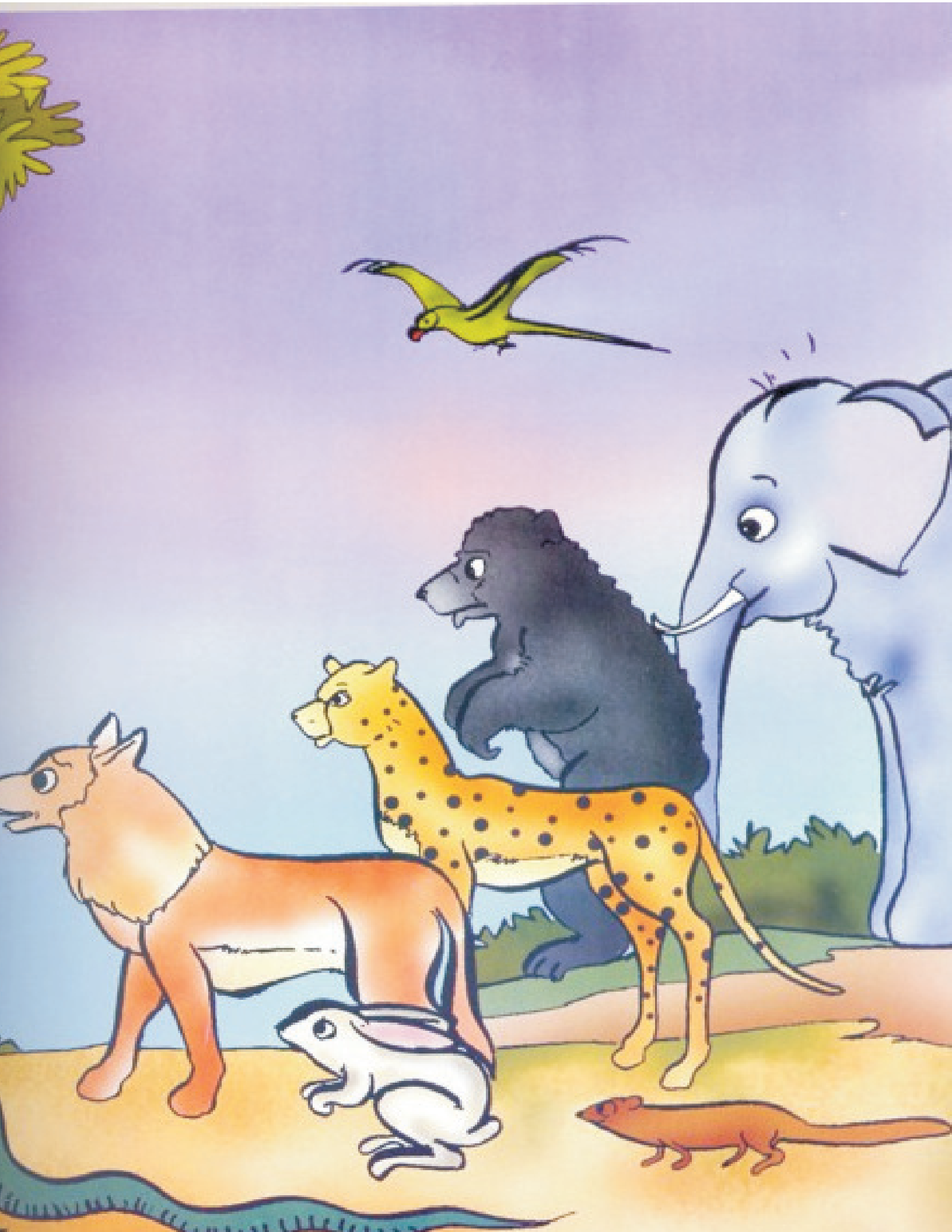

"दूसरा राजा? यह कैसे हो सकता है? मुझे तो खुद भगवान ने राजा बनाया है। चलो चलो मैं खुद चल कर देखता हूँ" –गधा बोला और सभी जानवरों के साथ उनके पीछे–पीछे चल पड़ा। जानवरों के साथ वह एक गहरे कुँए के पास पहुँचा। लोमड़ी ने कहा, "महाराज इसी कुँए में है दूसरा राजा"।

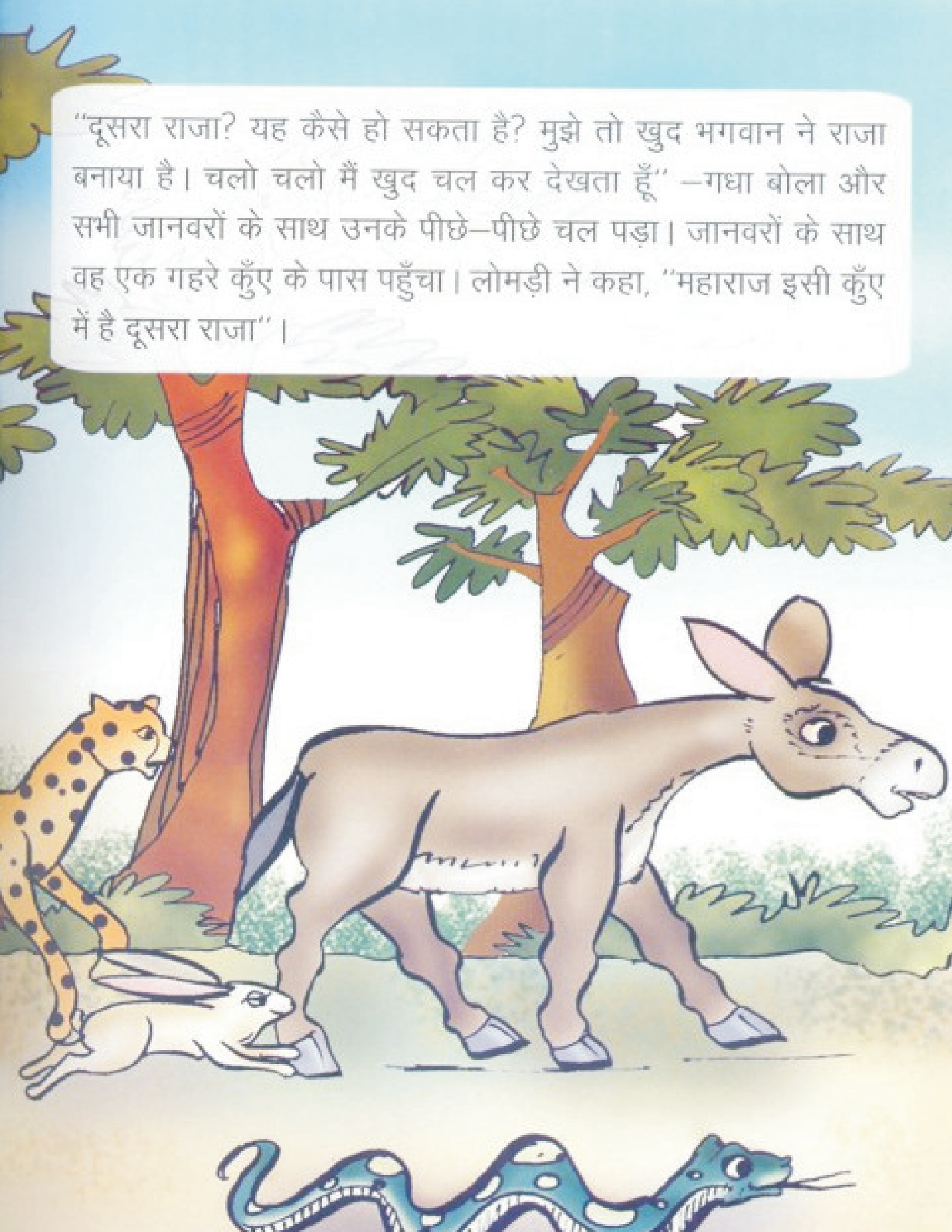

गधे ने कुँए में झाँका और अपनी परछाई देखी। "अरे सचमुच में यहाँ तो एक और गधा है", गधे राजा ने सोचा और वह चिल्लाया, "तुम कौन हो?"

कुँए से गूँज कर उसकी आवाज वापस आई और गूँजी, "तुम कौन हो?"

मैं यहाँ का राजा हूँ", गधा और जोर से चिल्लाया।

कुँए से फिर से वही आवाज़ वापस आई, "मैं यहाँ का राजा हूँ"।
"तू झूठा है", गधा चिल्लाया। "तू झूठा है", फिर से आवाज़ गूँजी।
"तू फ़रेबी है", गधा गुस्से से चीखा।
"तू फ़रेबी है", आवाज़ वापस आई।

अरे महाराज ये आपका अपमान कर रहा है, नन्हें खरगोश ने आगे आकर गधे को उकसाया। अन्य सभी जानवरों ने भी खरगोश की हाँ में हाँ मिलाई।

क्रोधित होकर आवेश में गधा बोला,
"मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा"।
कुँए से वही आवाज़ वापस आई, "मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा"।

"तेरी यह हिम्मत? "गधा चीखा।" तेरी यह हिम्मत?" आवाज़ फिर वापस आई। अब तक गधे का पारा सातवें आसमान पर पहुँच चुका था। उसने आव देखा न ताव और कुँए में छलाँग लगा दी।

भोंदू गधा अक्लमंद बनने चला था– पर राजा बनने के लालच में वह अपनी जान ही गँवा बैठा। जंगल में फिर से शेर राजा का राज था..... जानवर शिकार भी करते थे, घास–पात भी खाते थे, गाना भी गाते थे, उछलकूद भी मचाते थे....पर जंगल के गधे बड़े शर्मिन्दा थे....इसलिए वे जंगल छोड़ कर शहरों में आ गए। "बोझा ढो लेंगे.....पर शर्म से जंगल में नहीं रहेंगे", सोचा उन्होंने।

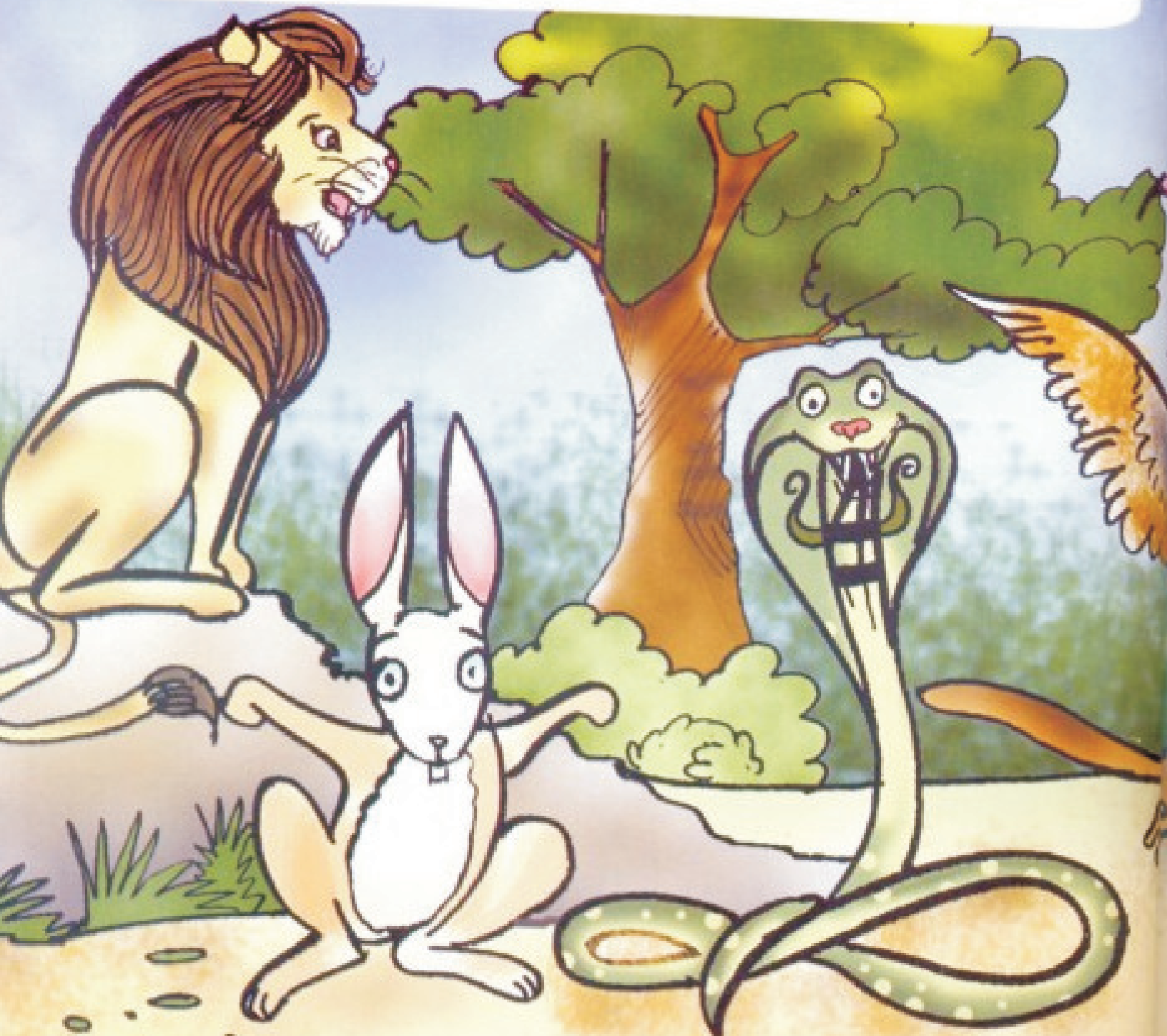

ISBN : 978-81-906764-7-2

मूल्य : ₹135/-

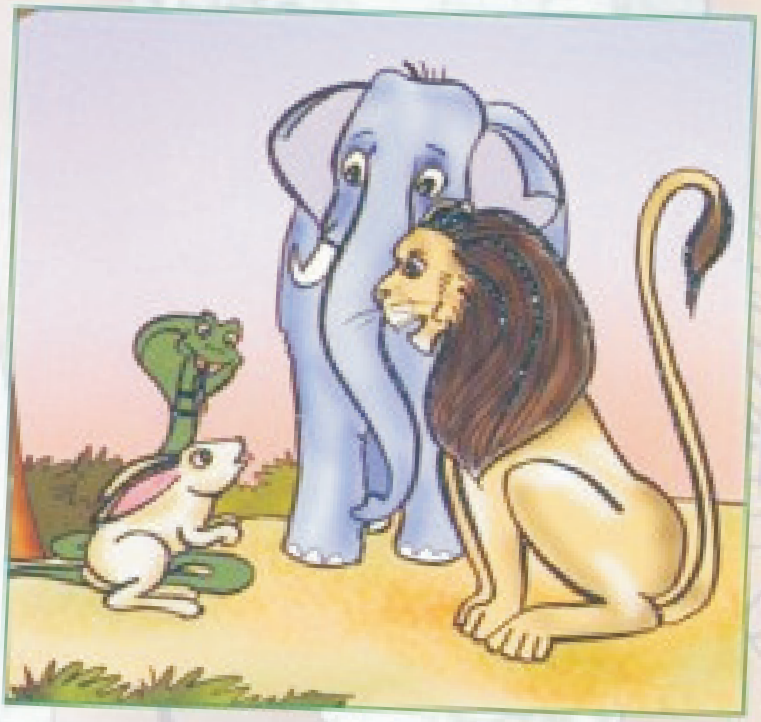

स्पर्शमणि
[illegible] पॉकेट-ए, [illegible] कैलाश,
ईस्ट ऑफ कैलाश,
नई दिल्ली – 110065
फो. नं. 9958077550